13

त्रासदी से विजय तक

(3:21-24क)

रोमियों, 1 पुस्तक में रोमियों की रूपरेखा में ''डॉक्ट्रिनल'' शीर्षक में हमने ''दण्ड दिया जाना,'' ''धर्मी ठहराना,'' ''पवित्र किया जाना'' और ''महिमा दिया जाना'' को देखा था। आर. सी. बेल ने लिखा है, ''यदि मसीहियत को बहुत बड़े कैथेड्रेल के रूप में माना जाता: तो दण्ड दिया जाना (1:18-3:20) भवन स्थल से सफाई; धर्मी ठहराया जाना (3:21-5[:21]) गहरी, ठोस नींव बन जाएगा, जिसकी भवन को आवश्यकता है; पवित्र किया जाना (अध्याय 6, 7) भवन का मुख्य भाग है; और महिमा दिया जाना (अध्याय 8) शीर्ष भाग है।''[1] हमने जगह साफ कर दी है (''दण्ड दिया जाना'') और नींव रखने को तैयार हैं (''धर्मी ठहराना'')।

1:18-3:20 में पौलुस ने ''यहूदियों और यूनानियों, दोनों पर दोष लगाया था कि वे सब के सब पाप के वश में हैं'' और ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं'' (3:9, 10)। यहां तक घने और काले रंगों की भरमार वाला निराशाजनक चित्र मिलता है। फिर 3:21 में, हम ''परन्तु अब ...'' शब्दों पर आते हैं।[2] हमारा अध्ययन त्रासदी से विजय की ओर मुड़ रहा है।[3]

''धर्मी ठहराया जाना'' वाला भाग अढ़ाई अध्यायों में है (3:21-5:21)। इस और अगले पाठ में 3:21-26 की समीक्षा होगी-यूनानी में एक लम्बा वाक्य।[4] लियोन मौरिस ने इस वचन पाठ को ''अब तक का लिखा जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण अकेला पद्य'' कहा।[5] एक टीकाकार ने लिखा, ''बहुत कम होता है कि बाइबल इतनी कम आयतों में इतना कुछ इकट्ठा करे ... धर्मशास्त्रीय विचार''[6] और एक अन्य ने सुझाव दिया है कि 3:21-26 में हमें ''मसीही विश्वास की शब्दावली'' मिलती है।[7]

इन आयतों को समझने के लिए हम केवल कुछ ही शब्दों का अध्ययन करेंगे। एक मुख्य अभिव्यक्ति ''धार्मिकता'' है (आयतें 21, 22, 25, 26)। हमारा वर्तमान पाठ इस शब्द के इर्द-गिर्द घूमता है।

धार्मिकता की घोषणा हुई (3:21-23)

1:16, 17 में पौलुस ने परमेश्वर की धार्मिकता के विषय अर्थात मनुष्यजाति को अपने साथ सही सम्बन्ध का आनन्द लेने के लिए योग्य बनाने हेतु अनुग्रहकारी प्रबन्ध, का परिचय दिया। उस विचार को तुरन्त विस्तार देने के बजाय पौलुस ने परमेश्वर की धर्मिकता की मनुष्यजाति की *आवश्यकता* को लम्बी चर्चा के लिए अपने आप को रोक लिया, परन्तु अन्त में, वह अपनी मूल चर्चा पर वापस आने को तैयार था, जिसमें उसने कहा, ''परन्तु अब ... परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है'' (3:21)।[8]

रोमियों के नाम पत्र की अब तक की हमारी यात्रा की तुलना उस गाइड के पीछे पीछे चलने से की जा सकती है, जो इससे सुन्दर नगर की ओर इशारा करते हुए कहता है, ''मैं आप को *वहां*

पर ले के जा रहा हूं'' फिर वह हमें जंगल में से होते हुए खतरनाक तराइयों में से ले जाता है, जब तक उस अपने गन्तव्य तक पहुंचने के लिए निराश नहीं हो जाते। कुछ देर बाद घने पेड़ों में से निकल हमें वह शानदार नगर दिखाई दिया। ऐसे ही पौलुस हमें अन्त में परमेश्वर की धार्मिकता के अद्‌भुत विषय तक लाता है।

उसकी धार्मिकता की प्रशंसा हुई (आयत 21)

अपने वचनपाठ की पहली तीन आयतों से हम परमेश्वर की धार्मिकता की कई सच्चाइयों को सीखते हैं। एक सच्चाई यह है कि यह धार्मिकता प्रकट की गई है। हम पढ़ते हैं, ''पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यवक्ता देते हैं'' (आयत 21) यह आयत अर्थ से इतनी भरपूर है कि हमें इसे ''पचाने योग्य, मुंह में आने के योग्य आकार के टुकड़ों'' में काटना पड़ेगा।

आयत 21 आरम्भ होती है, ''परन्तु अब *व्यवस्था से अलग*...।'' अंग्रेज़ी बाइबल NASB में व्यवस्था के लिए ''Law'' का ''L'' बड़ा दिया गया है। इस आयत में व्यवस्था मूसा की विशेषकर व्यवस्था को कहा गया है। परन्तु मूल धर्म शास्त्र में केवल ''व्यवस्था अलग'' ही है,[9] सो पौलुस एक सामान्य नियम की घोषणा भी कर रहा था। पिछले भाग के अन्त में उसने कहा था कि ''व्यवस्था कार्यों से'' मनुष्य ''उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा''[10] (3:20)। यह बात सच है, इसलिए उद्धार व्यवस्था को पूरा करने के बजाय किसी और आधार पर होना आवश्यक है।

आयत 21 के अगले भाग में जोड़ते हुए हम पढ़ते हैं, ''परन्तु अब व्यवस्था से अलग *परमेश्वर की* यह *धार्मिकता* प्रकट हुई ...।'' जैसे पहले चर्चा की गई थी, ''धार्मिकता'' का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए होने पर आमतौर पर इसका अर्थ ''सही व्यक्ति, पूरी तरह से सही'' होता है। मनुष्यों पर लागू करने पर इसका एक अर्थ ''(प्रभु के साथ सही खड़े होना), गले मढ़ी गई शुद्धता'' है। 3:21 का वाक्यांश ''परमेश्वर की धार्मिकता'' का इस्तेमाल परमेश्वर के अपने स्वभाव के लिए या अधर्मी लोगों पर धार्मिकता मढ़ने के उसके प्रबन्ध के लिए किया जा सकता है। मेरा मानना है कि इस आयत में पौलुस बाद वाले अर्थ में ''धार्मिकता'' का इस्तेमाल कर रहा था।

मेरा तर्क इस प्रकार है। 1:17 में पौलुस ने कहा कि सुसमाचार में ''परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होती है।'' उस आयत में ''धार्मिकता'' का अर्थ सम्भवतया मनुष्यों को ''सही खड़े होने'' देने की परमेश्वर की योजना है। परमेश्वर के साथ ''सही खड़े होने'' का ढंग तुरन्त बताने के बजाय पौलुस ने पहले उसके साथ मनुष्य जाति के ''गलत खड़े होने'' को लिखा (देखें 1:18)। इस दुविधा की स्वाभाविक प्रक्रिया यह पुकार करना था कि ''क्या किया जा सकता है?'' रोमियों 1:17 में पौलुस ने मनुष्यजाति के लिए *परमेश्वर* द्वारा किए गए काम का वर्णन करते हुए उस प्रश्न का उत्तर देना आरम्भ किया। 3:21 को एक ही अर्थ वाली दोनों आयतों के CJB में 3:21 में ''धार्मिकता'' का अनुवाद ''अपनी दृष्टि में लोगों को धर्मी बनाने का परमेश्वर का ढंग'' किया गया है।

वहीं हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर का अपना धार्मिक स्वभाव उस प्रक्रिया का भाग है। 3:25, 26 में जब पौलुस ने ''उस [परमेश्वर] की धार्मिकता'' की बात की

तो उसके मन में स्पष्ट रूप से परमेश्वर का चरित्र था। इसलिए आयत 21 से 26 में ऐसा लगता है कि ''धार्मिकता'' के दो अर्थ एक-दूसरे से अलग हैं। जॉन. आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि इन वचनों में, ''परमेश्वर की (या से) धार्मिकता उसके धार्मिक स्वभाव, उसके बचाने वाले को प्राथमिकता और उसके सामने धार्मिक खड़े होने के उसके दान *का मेल* है।''[11] एक धार्मिक परमेश्वर अधार्मिक व्यक्ति को धार्मिकता का अर्थ देता है।

आयत की अगली ''ग्राही'' में जोड़ा गया है, ''पर अब ... व्यवस्था के बिना परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है।'' ''प्रकट की गई'' *phaneroo* से लिया गया है, जिसका अर्थ है '''दृश्यमान, स्पष्ट करना, ...' बताना।''[12] बीते समय में यह स्पष्ट नहीं था कि परमेश्वर अधार्मिकता को धार्मिकता कैसे गिनेगा। (वास्तव में, पौलुस इसे हर किसी पर, जो परमेश्वर की योजना से अनजान था, प्रकट करने जा रहा था।)

अब हम आयत को यह पढ़ते हुए समाप्त करते हैं, ''पर अब ... व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रकट हुई है, *जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यवक्ता देते हैं*।'' ''व्यवस्था और भविष्यवक्ता'' पूरे पुराने नियम को कहने का एक सामान्य ढंग था (देखें मत्ती 7:12; 11:13; 22:40)। छुटकारा ''व्यवस्था के बिना'' (रोमियों 3:21) हो सकता होगा, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि व्यवस्था में इसका कोई प्रमाण नहीं था। पौलुस अपने पाठकों को यह बताना चाहता था कि मनुष्यों को धर्मी मानने की परमेश्वर की योजना परमेश्वर के मन में बाद में आया विचार नहीं था।

व्यवस्था और भविष्यवक्ता किसकी गवाही देते थे? ''विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता'' की, जिसकी चर्चा अगली आयत में की गई है। व्यक्ति के विश्वास से धर्मी ठहराए जाने के नियम की पुष्टि व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में की गई है। रोमियों 4 में पौलुस द्वारा बताया गया अब्राहम का बड़ा उदाहरण, व्यवस्था (पुराने नियम की प्रथम पांच पुस्तकें) से ही लिया गया था। रोमियों 1:17 में पौलुस का प्रसिद्ध वचन भविष्यवक्ताओं से ही लिया गया था (हबक्कूक 2:4)। पुराने नियम में विश्वास के उदाहरणों की भरमार है (देखें इब्रानियों 11)।

उसकी धार्मिकता ''की व्याख्या की गई'' (आयत 22क, ख)

आयत 22क ''परमेश्वर की धार्मिकता *जो विश्वास करने से*'' होती है, की बात करती है। पौलुस के तर्क को ध्यान से देखें। यदि हम पूरी तरह से व्यवस्था का पालन करने के आधार पर उद्धार नहीं पा सकते तो किस आधार पर पा सकते हैं? 1:16, 17 में पौलुस के आरम्भिक कथन पर फिर से विचार करें:

> क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह *हर एक विश्वास करने वाले के लिए,* पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता *विश्वास से, और विश्वास के लिए* प्रकट होती है; जैसा लिखा है, कि *विश्वास से* धर्मी जन जीवित रहेगा।

3:22 में विश्वास पर ज़ोर सुनाई देता है: ''परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर *विश्वास* करने से सब *विश्वास* करने वालों के लिए है; ...।'' ''यीशु मसीह पर विश्वास'' का

अनुवाद ''यीशु मसीह *का* विश्वास'' भी हो सकता है (देखें KJV)।[13] कइयों का मत है कि यह मनुष्यजाति के लिए पृथ्वी पर मरने हेतु आने की यीशु की *विश्वास योग्यता* की बात है (देखें CJB), परन्तु अधिकतर लेखकों और अनुवादकों का मानना है कि यह वाक्यांश यीशु *में* विश्वास की बात है (देखें NKJV; NIV; RSV)। परन्तु सब इस बात पर सहमत होते हैं कि ''सब विश्वास करने वालों के लिए'' (आयत 22ख) शब्दों में निजी विश्वास को ध्यान में रखा गया है। ''विश्वास'' शब्द वर्तमानकाल में हैं, जो निरन्तर क्रिया का संकेत हैं। CJB में ''उन सबको जो भरोसा रखना जारी रखते हैं'' है।

धार्मिकता की दूसरी सच्चाई यह है कि यह विश्वास/प्रतीति पर आधारित है। विश्वास/प्रतीति हमारे वचन पाठ का मुख्य शब्द है। आयत 4 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर ने अपने लोगों को *हमेशा* विश्वास/प्रतीति के आधार पर आशीष दी है।

हमने पहले ''विश्वास/प्रतीति'' शब्द पर चर्चा की है। आयत 22 में महत्वपूर्ण बात यह है कि पत्र में पहली बार विश्वास को विशेषकर *मसीह* से जोड़ा गया है। ''पौलुस सामान्य अर्थों में विश्वास की या इसे परमेश्वर के अधिकार में सामान्य भरोसा रखने के रूप में बात नहीं कर रहा है, बल्कि वह विश्वास को उससे जोड़ रहा है, जो पापियों के लिए पृथ्वी पर मरने आया था।''[14] यीशु में अपने विश्वास को व्यक्त करने के लिए अच्छा शब्द *भरोसा* है: अपने उद्धार के सम्बन्ध में हम अपने आप में और अपनी योग्यताओं और अच्छाई में भरोसा करना छोड़ कर यीशु में और जो कुछ उसने हमारे लिए किया है, उस पर भरोसा करने लगते हैं।

उसकी धार्मिकता दिखाई गई (आयतें 22ग, 23)

यह हमें आयत 22 के अन्त अर्थात ''क्योंकि कुछ भेद नहीं'' में ले आता है।'' यह वाक्यांश किसकी बात करता है? इसका उत्तर स्पष्ट नहीं है क्योंकि 21 से 26 आयतें एक निरन्तर वाक्य में हैं। कुछ अनुवादों में वाक्य को तोड़कर इसे ''कुछ भेद नहीं है'' बनाते हुए पिछली आयत से जोड़ा गया है: ''सब विश्वास करने वालों के लिए'' (देखें NEB; NLT)। ''भेद नहीं'' वाक्यांश का अर्थ यह बना देगा कि यहूदी हों या अन्यजाति सबका उद्धार हो जाएगा यानी सबका उद्धार एक ही आधार पर होगा। यह निश्चय ही, बाइबल की सच्चाई है (देखें गलातियों 3:26-28)। जे. डी. थॉमस ने लिखा है, ''धर्म शिक्षाएं, जिनमें यह माना जाता है कि किसी भी संस्कृति में रहने वाले मनुष्य का उद्धार हो सकता है, क्योंकि परमेश्वर अलग-अलग लोगों से जो, रोमियों के संदेश को नहीं समझते अलग-अलग तरह से व्यवहार करता है।''[15]

अन्य अनुवादों में वाक्य को तोड़ा गया है, जिससे ''भेद नहीं'' उस वाक्यांश पर अर्थात ''क्योंकि सबने पाप किया'' पर लागू हो (आयत 23क; NKJV; NIV; RSV देखें)। पौलुस ने पिछले दो अध्यायों में घोषणा की थी कि यहूदी और अन्यजाति दोनों पापी हैं, इसलिए यह अधिक सम्भावना है कि ''भेद नहीं'' का अर्थ आयत 23 में बताए गए पाप का विश्वव्यापी स्वभाव है।

फिर हम आमतौर पर दोहराई जाने वाली आयत 3:23 पर आते हैं: ''इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।'' यह आयत 1:18-3:20 का सार है, जो मानवीय त्रासदी का सार है। यह अर्थ के साथ पैक हुआ है।

''इसलिए कि सबने *पाप किया है* ...'' (आयत 23क)। ''पाप'' के रूपों का इस्तेमाल

रोमियों के पहले आठ अध्यायों में 50 से अधिक बार हुआ है, इसलिए यह समझना आवश्यक है कि इस शब्द का अर्थ क्या है। ''पाप किया'' का अनुवाद *hamartano* से किया गया है, जिसका अर्थ है ''निशाने से चूकना।'' यह *hamartia* अर्थात नैतिक और आत्मिक असफलता के लिए ''सबसे व्यापक शब्द'' का रूप है।[17] इस शब्द का इस्तेमाल यूनानी लोगों द्वारा निशानेबाज़ द्वारा निशाना चूक जाने पर किया जाता था।[18] जैसा कि हम देखेंगे, हमारा आत्मिक ''निशाना'' परमेश्वर और हमारे जीवनों में उसकी इच्छा है। पौलुस ने यह बात साबित कर दी थी कि सब निशाने से चूक गए हैं (1:18-3:20)। 3:23 में ''पाप किया है'' कृदंत (भूत) काल में है। पहली बार पाप करने पर व्यक्ति पापी बन जाता है, जिसे उद्धार की आवश्यकता है।

रोमियों में ''पाप'' का समानार्थक शब्द ''अपराध'' है (गलातियों 3:19; 1 तीमुथियुस 2:14; इब्रानियों 2:2; 9:15)। अनुवादित शब्द ''अपराध'' एक मिश्रित यूनानी शब्द *parabaino* (*baino* [''मैं जाता हूं''] के साथ *para* [''साथ-साथ'']) से लिया गया है। इसका अर्थ ''अतिक्रमण करने के लिए ... साथ-साथ जाना है।''[19] रोमियों 4:15 में संज्ञा रूप ''उल्लंघन'' और 5:14 में ''पाप'' अनुवाद किया गया है। अंग्रेज़ी शब्द ''transgress'' का मूल अर्थ ''पार करना'' है।[20] भूमि पर एक रेखा खींचे जाने और किसी के उसे पार करने पर विचार करें। फिर उस रेखा पर हमारी रक्षा के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई सीमाओं और प्रतिबन्धों के चिह्नों के रूप में विचार करें।[21]

रोमियों में ''पाप'' के लिए एक और वाक्यांश ''अधर्म'' है (4:7)। ''अधर्म'' का अनुवाद *anomia* के बहुवचन रूप से किया गया है, जिसमें ''व्यवस्था'' के लिए शब्द (*nomos*) में नकारात्मक (*a*) जोड़ा गया है। यह शब्द परमेश्वर की इच्छा के लिए मनुष्य के मन में सम्मान न होने को दिखाता है।

''क्योंकि सबने पाप किया है और ... *रहित हैं*'' (3:23)। ''रहित हैं'' का अनुवाद *hustereo* से किया गया है, जिसका अर्थ ''पीछे होना ... , से कम होना'' है।[22] इसका इस्तेमाल दौड़ में पीछे रह जाने वाले धावक के लिए किया जा सकता है। यदि हम तीरंदाज के रूप का इस्तेमाल करें तो उसके तीर के निशाने से कम रह जाने पर इसका अर्थ उसका ''निशाना चूकना'' किया जा सकता है।[23] ''कमी'' शब्द इसी विचार को बताता है।[24] ''रहित हैं'' यूनानी भाषा में वर्तमानकाल में है और निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। पापी बनकर न केवल हमने कालांतर में पाप किया है, बल्कि हम दिन-प्रतिदिन पाप करते रहते हैं!

हम किस ''निशाने'' से ''रहित हैं''? ''इसलिए कि सब ने पाप किया है और *परमेश्वर की महिमा* से रहित हैं'' (आयत 23)। ''परमेश्वर की महिमा [*doxa*]'' पहले और सबसे पहले उसकी भयदायक उपस्थिति की अभिव्यक्ति है; परन्तु बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर उस महिमा को अपने लोगों के साथ साझा करने का इच्छुक है (देखें 8:18; 9:23)। बाइबल यह भी घोषणा करती है कि पृथ्वी पर हमारा उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है (देखें 4:20; 11:36; यशायाह 43:7; मत्ती 5:16)। ''परमेश्वर की महिमा'' शब्दों में इतना कुछ लिपटा हुआ है कि अनुवादकों को इसे एक वाक्यांश में समझाना कठिन लगता है। NEB में ''the divine splendor'' है जबकि TEV में ''God's saving presence'' है। फिलिप्स के संस्करण में हमें ''परमेश्वर की योजना की सुन्दरता'' मिलता है जबकि NLT में ''परमेश्वर का तेज से भरा मानक'' है।

''परमेश्वर की महिमा'' में मिलने वाले विचार को उसकी महिमा के रूप में लें या हमारे

लिए चाही जाने वाली महिमा के लिए, हम इससे ''रहित हैं।'' उसकी अपनी महिमा के सम्बन्ध में, उस महिमा को देखने पर हम अपने आपको अत्यधिक दुष्ट देखते हैं (3:10-18)। हमारे लिए चाही जाने वाली उसकी महिमा के सम्बन्ध में हम वैसा होने, से जो वह हमें बनाना चाहता है, कितना कम है!

शायद अब कोई कह रहा है, ''बेशक, आप *मुझे* नहीं कह रहे!'' 3:23 की सबसे महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति सबसे छोटा शब्द ''सब'' हो सकता है: ''इसलिए कि *सब* ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।'' ''सब'' में हर पुरुष, स्त्री, लड़का और लड़की आते हैं, जो परमेश्वर के सामने जवाबदेह हैं। यदि आप यहां लिखा हुआ पढ़ सकते हैं तो इसमें *आप* भी हैं।

''पाप'' के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द याद हैं? एक तो रहित होने की बात करता है जबकि दूसरा बहुत दूर चले जाने पर ज़ोर देता है। क्या हम में से कोई कह सकता है कि हम वह करने में कभी नाकाम रहे हैं, जो हमें करना चाहिए, या हमने वह नहीं किया जो हमें करना चाहिए? वास्तव में हम में से हर किसी को यह मानना पड़ेगा कि हम पापी हैं। कई पापी हैं, जो यीशु के लहू के द्वारा बचाए गए हैं और बिना बचाए हुए पापी हैं, परन्तु हैं सब पापी!

कई बार लोग विरोध करते हैं, ''परन्तु मैं उन लोगों से कहीं अच्छा हूं, जिनके जीवनों को मैं जानता हूं। निश्चय ही यह इस बात को साबित करता है कि मैं पापी नहीं हूं।'' हमारे ''लक्ष्य'' यानी परमेश्वर की महिमा की तुलना दूर के किसी टापू से करें। यदि मैं और आप समुद्र के तट पर खड़े हों और उस टापू में कूद जाएं तो आप सम्भवतया मुझ से अधिक छलांग लगाएं, परन्तु हम में से कोई भी एक ही छलांग से दूर के उस टापू तक नहीं पहुंच सकता। इसके विपरीत हम पानी में हाथ-पांव मारते हुए बड़ी बुरी तरह अपने लक्ष्य से चूक जाएंगे। बिल्कुल ऐसे ही, हम चाहे अपने आप को कितना भी अच्छा क्यों न समझते हों, हम परमेश्वर की महिमा से कोसों दूर हैं।

मनुष्यजाति में एक बात साझी है। यह हमारी राष्ट्रीयता, जाति या समान संस्कृति नहीं है। एक बात जो हम सब में पाई जाती है, वह यह है कि हम सब परमेश्वर के सामने अयोग्य हैं![25] हम सभी पापी हैं!

किसी मण्डली का बुलेटिन बोर्ड सभा स्थल के सामने था। हर सप्ताह, प्रचारक वहां से गुजरने वालों के विचार के लिए बोर्ड पर कुछ विचार लिख देता था। एक सप्ताह उसने यह विचार लिखा, ''यह कलीसिया केवल पापियों के लिए है।'' कुछ दिनों के बाद उसे डाक में एक गुमनाम पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि ''मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि यह कलीसिया केवल पापियों के लिए है। मैं पिछले पच्चीस साल से इस कलीसिया का सदस्य हूं, परन्तु मुझे कभी अहसास नहीं हुआ कि न मेरी यहां जगह है और न स्वागत।'' अगले सप्ताह प्रचारक ने बोर्ड पर यह संदेश लिख दिया, ''इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)।[26]

कालांतर का एक प्रसिद्ध सुसमाचार प्रचारक किसी दूसरे नगर में जाने से पहले वहां के मेयर को पत्र लिखता था। वह उस अधिकारी से वहां के लोगों की आत्मिक समस्याओं और उनकी सूची मांगता, जिन्हें सहायता और प्रार्थना की आवश्यकता होगी। एक अवसर पर उसे पूरे नगर की फोन डायरेक्टरी की प्रति मिलने पर आश्चर्य हुआ![27] इसे भेजने वाले अधिकारी को वह समझ आ गया था, जो कइयों को नहीं आता: ''*सब ने* पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं''!

जैसा कि 1:18-3:20 में साबित किया गया है, *हम सभी* पापी हैं, जो अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकते। *परमेश्वर* को ही पहल करनी पड़ी। हमें कितने आभारी होना चाहिए कि ''... परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रकट हुई है, ... अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता, ... सब विश्वास करने वालों के लिए ...'' (3:21, 22)। एक और अद्भुत सच्चाई यह है कि सबको परमेश्वर की आवश्यकता है, जिस कारण यह सबके लिए दी गई है।

धार्मिकता दी गई (3:24क)

धर्मी परमेश्वर उनको धर्मी कैसे गिन सकता है, जो स्पष्ट रूप से और पूरी तरह से अधर्मी हैं? आयत 24 में हम मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के आत्मिक उपाय के भेद में आते हैं: परमेश्वर अधर्मी लोगों को धर्मी कैसे घोषित करता है। इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा का आरम्भ हम दो शब्दों को उभारते हुए करते हैं।

उसकी धार्मिकता अनुभव की गई: ''धार्मिकता''

हमें लग सकता है कि आयत 22 के अन्त के साथ आयत 23 कोष्ठक में दिया गया विचार है, जिसमें आयत 24 आयत 22 के आरम्भ में दिए गए विचार को आगे बढ़ाती है: ''परमेश्वर की वह धार्मिकता, ... सब विश्वास करने वालों के लिए है; ... उसके अनुग्रह से ... सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।'' पहला शब्द जिसे हम उभारना चाहते हैं वह ''धर्मी ठहराए जाते'' (*dikaioo* से) है। हमने 3:21-5:21 को ''धार्मिकता'' पर भाग कहा है, इसलिए हमें इस शब्द के अर्थ का पता होना आवश्यक है।

यूनानी शब्द का अनुवाद ''धर्मी'' और ''धर्मी ठहराना,'' ''धार्मिक'' और ''धार्मिकता'' शब्दों के परिवार (*dikai*) से है, परन्तु आयत 24 में रोमियों में यह विशेष रूप (*dikaioo*) पहली बार आता है। नये नियम में *dikaioo* के इस्तेमाल से ''हमें लगभग हमेशा एक कानूनी सम्बन्ध मिलता है।''[28] पौलुस ने अक्सर पत्र में अदालती भाषा का इस्तेमाल किया है और वही रूपक यहां दिखाई देता है। ''धर्मी ठहराए'' के लिए फिलिप्स के संस्करण में ''freely acquitted'' है।

''धर्मी ठहराए'' शब्द का अर्थ यह नहीं है कि हमें ''धर्मी *बनाया*'' गया है, बल्कि हमें परमेश्वर की ओर से ''धर्मी *घोषित*'' किया गया है।[29] वह हम से ऐसे व्यवहार करता है, ''जैसे'' हम धर्मी हों। अंग्रेज़ी में कई प्रचारक और शिक्षक इसे व्यक्त करने के लिए शब्दों का खेल इस्तेमाल करते हैं: ''It's *just* as *if I'd* never sinned'' यानी ''यह तो *ऐसे है जैसे* मैंने कभी पाप न किया हो।'' (इसे तेजी से पढ़ने पर ''just-if-ied never sinned'' पढ़ा जाएगा।)

मैं ''justified'' को चर्च बुलिटनों को ध्यान में रखे बिना नहीं पढ़ सकता, जो मैंने प्रचार करना आरम्भ करते समय छपवाए थे। प्रिंटिंग जगत में, ''justify'' का अर्थ पंक्तियों को एक सार पृष्ठ के दाईं ओर करना होता है। प्रकाशन के लिए जिसे आप पढ़ रहे हैं, दाईं ओर मार्जिन को जस्टिफाई करने के लिए कम्प्यूटर प्रोग्राम सैट किया गया था। पच्चास साल पहले मुझे मार्जिनों को हाथ से जस्टिफाई करना पड़ता था। पहले मैं हर पंक्ति का अन्त एक रूप बनाने के लिए स्लैश चिह्नों (/ / / /) को जोड़ते हुए सामग्री को टाइप करता था। फिर मैं देखता था कि हर पंक्ति में

शब्दों के बीच में कहां अतिरिक्त जगह है-पंक्ति के अन्त में जितने स्लैश चिह्न होते उतने ही अतिरिक्त स्पेस होते। अन्त में आवश्यक स्पेसों को जोड़ते हुए सामग्री को फिर से टाइप करता, जिससे लाइनें एक सार दिखाई दें। लाइनें *वास्तव में* एक सार नहीं होती थीं, परन्तु ''जस्टिफिकेशन से'' यह ऐसे लगता था ''जैसे'' वे एक सार हों।

उसकी धार्मिकता व्यक्त की गई: ''अनुग्रह''

आप और मैं पापी हैं, इसलिए हम अपने आपको कभी ''जस्टिफाई'' नहीं कर सकते, तो फिर यह कैसे हो सकता है? हमारे वचन पाठ में आगे है, ''*उसके अनुग्रह से ... सेंत मेंत* धर्मी ठहराए जाते हैं'' (आयत 24)। ''सेंत मेंत'' धर्मी ठहराए जाने का *ढंग* है जबकि ''अनुग्रह से'' *माध्यम*। ''सेंत मेंत'' एक ही यूनानी शब्द *dorean* से लिया गया है, जो ''दान'' (*dorea*) के लिए शब्द है। *Dorean* का अर्थ है ''दान के ढंग से।''[30] इसका आसान सा अनुवाद होगा ''नि:शुल्क।''[31]

रोमियों 1:5, 7 में पहले हमने ''अनुग्रह'' (*charis*) शब्द देखा है, परन्तु यहां पहली बार हमें यह महान सच्चाई दी गई है कि हमारा *उद्धार* अनुग्रह से होता है (देखें इफिसियों 2:8)। रोमियों में ''अनुग्रह'' एक और मुख्य शब्द है, जो कम से कम बीस बार मिलता है। *चेरिस* का मूल शब्द एक क्रिया है, जिसका अर्थ ''आनन्द करना'' है।[32] *चेरिस* अपने आप में ''*मुफ्त* दिए जाने के मूल विचार'' के साथ पौलुस के लिए ''मुख्य अवधारणा'' है।[33] ''अनुग्रह'' की परिभाषा ''अनार्जित कृपा'' (देखें AB) अर्थात उस कृपा के रूप में की जाती है, जो ''कमाई न गई हो।''

अबिलेन, टैक्सस में अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज में दाखिला लेने के थोड़ी देर बाद, मैंने टैरल, ओक्लाहोमा, में रविवार के दिन प्रचार करना आरम्भ कर दिया था। वहां पहुंचने के लिए हर सप्ताहांत मैं किसी साथी छात्र के साथ उसकी गाड़ी पर बैठकर जाता। हम अबिलेन में सोमवार प्रात: वापस पहुंच जाते और मुझे सोमवार को 8:00 बजे प्रात: टाइपिंग क्लास लगानी होती थी। यह टाइपिंग क्लास नये छात्रों के लिए थी, परन्तु क्लास में नये छात्र केवल दो थे, जिनमें से एक मैं था। थोड़ी सी नींद लेकर व्यस्त सप्ताहांत के साथ मुझे बिना कई-कई गलतियां किए टाइप करना असम्भव लगता था। सेमेस्टर के अन्त तक, गलतियां कम करने की कोशिश के बाद भी मैं ''प्रति मिनट शून्य शब्द'' ही टाइप कर पाता! शिक्षक मुझे कम अंक देकर फेल कर सकता था, परन्तु उसने मुझे पास करने के लिए अधिक अंक दे दिए! ''वह अधिक अंक देना एक *दान* था, जो *अनुग्रह से* दिया गया, क्योंकि मैं उन अंकों को पाने का हकदार कदापि नहीं था।''[34]

बेशक, परमेश्वर के अनुग्रह की सबसे अद्भुत अभिव्यक्ति अपने पुत्र को हमारे पापों के लिए मरने के लिए भेजना था (3:25)। उद्धार मुफ़्त में हो सकता है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह सस्ता था;[35] परमेश्वर को इसे अपने पुत्र की कीमत देनी पड़ी!

''उसके *अनुग्रह से सेंत मेंत* धर्मी ठहराए जाते हैं'' कहकर पौलुस वास्तव में ज़ोर देने के लिए दोहराव का इस्तेमाल कर रहा था; वह नहीं चाहता था कि हम इस बात से चूकें कि ''धर्मी ठहराया जाना *फ्री* है *फ्री* है, फ्री है!'' पापी मनुष्य होने के कारण हम अपना उद्धार कमा नहीं सकते। परमेश्वर द्वारा ठहराई गई शर्तों को पूरा करने पर भी हम उसे ज़िम्मेदार नहीं बना सकते। परमेश्वर हमारा किसी प्रकार देनदार नहीं है। हमारा उद्धार या तो अनुग्रह से हो सकता है या

बिल्कुल नहीं!

क्या मुझे यह जोड़ना पड़ेगा कि ''उसके अनुग्रह से'' उद्धार में उद्धार पाने के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई किसी आज्ञा को निकाला नहीं गया (देखें प्रेरितों 2:36-38)? उपहार को ग्रहण किया जाना आवश्यक है। जिम्मी एलन ने लिखा है, ''दान ग्रहण किए जाने से पहले पेशकश की जाती है। इसे ग्रहण किए जाने पर ही यह दान होता है। इसे ग्रहण किए जाने में जो भी बात शामिल हो उसे शर्त कहते हैं। सचमुच किसी भी क्षेत्र में शर्त रहित दान जैसी कोई चीज़ नहीं है।''[36]

तौ भी इस तथ्य को समझना किसी भी प्रकार इस अद्‌भुत सच्चाई से दूर नहीं करता कि हम ''अनुग्रह से सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं''! फिलिप येंसी ने लिखा है कि ''अनुग्रह'' शब्द में ''सुसमाचार का सार है, जैसे सूर्य की आकृति में पानी की बूंद हो सकती है।''[37] इस संकलन के दो सौ साल बाद ''अमेज़िंग ग्रेस'' संसार के सबसे प्रसिद्ध गीतों में से एक गीत बन गया। उसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है:

> फ़ज़ल अजीब! क्या खुश इलहान!
> कि मुझको दी नजात!
> कि फेरी मेरी भटकी जान;
> और दूर की दिल की रात।[38]

सारांश

हमने रोमियों 3:24 के खज़ाने खाली नहीं किए हैं। अगले पाठ में हम आयत 24 को पूरा करेंगे और फिर 25 और 26 आयतों का अध्ययन करेंगे।

इस पाठ को समाप्त करते हुए मैं आप को अपने वचन पाठ के आरम्भ के शब्दों अर्थात ''परन्तु अब ...'' (आयत 21क) के साथ पीछे ले जाना चाहता हूं। डी.मार्टिन लायड-जोंस ने कहा है कि ''सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में इन दो शब्दों 'परन्तु अब' से ... और अद्‌भुत शब्द नहीं हैं।''[39] नये नियम के लेखकों ने इन शब्दों का इस्तेमाल जो मसीह में हैं उन लोगों की स्थिति की तुलना उन लोगों की स्थिति से करने के लिए किया है, जो मसीह से बाहर हैं।[40] उदाहरण के लिए इफिसियों 2 में हम पढ़ते हैं:

> ... तुम लोग *उस समय* मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे। *पर अब* तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो (आयतें 12, 13)।

आप में से कइयों को ''पर अब'' का अपना अनुभव होगा।[41] परमेश्वर के अनुग्रह से आप यीशु के लहू से धर्मी ठहराए गए हैं। आत्मिक तौर पर आप त्रासदी से विजय में गए हैं। आप में से कई ''उस समय'' की स्थिति में ही हैं। शायद आपको यीशु पर विश्वास और भरोसा नहीं, या शायद आपने उसकी इच्छा को प्रेमपूर्वक मानकर अपने विश्वास को दिखाया नहीं (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3, 4)। आपकी जो भी आत्मिक आवश्यकता हो, मेरी प्रार्थना है

कि आप तुरन्त परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह को मान लें। *आज* ही आप ''उस समय'' से ''परन्तु अब'' में आ सकते हैं!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यह और अगला पाठ एक ही पाठ के एक और दो भाग हैं। यदि आप दोनों प्रस्तुतियों को मिलाना चाहें तो इस सरल रूपरेखा का इस्तेमाल किया जा सकता है: धार्मिकता घोषित हुई (आयतें 21-23); धार्मिकता पर चर्चा की गई (आयतें 24, 25क); धार्मिकता की पैरवी की गई (आयतें 25ख, 26)। इस प्रस्तुति का वैकल्पिक शीर्षक ''परन्तु अब'' हो सकता है।

टिप्पणियां

[1]आर. सी. बेल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 29. [2]यूनानी में यहां ''अब [*nuri*] परन्तु [*de*]'' है। [3]इस पाठ का शीर्षक लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1988), 177 में इस्तेमाल की गई एक अभिव्यक्ति है। [4]देखें KJV. आसानी से पढ़ने के लिए अधिकतर आधुनिक अनुवादों में इस वाक्य को कई भागों में तोड़ा गया है। NASB के अनुवादकों ने इसे दो वाक्य बनाया, परन्तु यह ध्यान रखें कि मूल में यह एक ही वाक्य था। [5]मौरिस, 173. [6]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लिकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 125. [7]जेम्स आर. एड्वर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इन्टरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 97. [8]रोमियों 1:17 में सुसमाचार के प्रचार में परमेश्वर की धार्मिकता के प्रकाशन की बात करते हुए *वर्तमान* काल (''प्रगट होती है'') का इस्तेमाल किया गया है। रोमियों 3:21 में यीशु की मृत्यु (अतीत की एक घटना) में परमेश्वर की धार्मिकता को दिखाने के लिए *भूत* काल (''प्रगट हुई है'') का इस्तेमाल हुआ है। [9]यह अर्थ NASB वाली मेरी प्रति के एक व्याख्या नोट के रूप में दिया गया है। देखें NEB. [10]*दि इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामैंट,* 580.

[11]जॉन आर. डब्लयू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फार द वर्ल्ड* (डाउनर्स ग्रोव,इलिनोई: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1994), 109. [12]डब्लयू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, और विलियम व्हाइट, जूनियर, *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामैंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 390. [13]यूनानी धर्मशास्त्र में ''यीशु मसीह'' के लिए शब्द ''सम्बन्धकारक'' में है, जिसका अनुवाद ''यीशु मसीह का'' (आत्मगत) या ''यीशु मसीह में'' (यथार्थ) कुछ भी किया जा सकता है। इस अर्थ में यह आत्मगत या यथार्थ दोनों हो सकता है। [14]मौरिस, 175-76. [15]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 27. [16]*द एनेलिटीकल ग्रीक लैक्सीकन* (लंदन: सेमुअल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 17. [17]वाइन, 576. [18]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामैंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कंमैट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 89. [19]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम्म, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. और संपा. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1977), 478. [20]*अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. (2002), s.v. ''transgress.''

[21]इसे एक आसान दृश्य बनाया जा सकता है। भूमि पर या फर्श पर एक वास्तविक या काल्पनिक रेखा खींचें और फिर उस पर कदम रखें। [22]*द एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 420. [23]ब्रिस्को, 89. [24]*द एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 420. [25]एडवर्ड, 102. [26]जॉन टी. कैरोल और जेम्स आर. कैरोल, *प्रीचिंग द हार्ड सेइंग्स ऑफ़ जीज़स* (*पीबॉडी,* मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशिंग, 1996), 1287 से लिया गया। [27]पॉल ली टैन, *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ 7,700 एलस्ट्रेशंस* (रॉकविले, मेरीलैंड: अश्योरेंस पब्लिशर्स, 1979), 17. [28]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामैंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल गरहर्ड फ्रेड्रिक, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 175 जी. श्रेंक, *''dikaióō.''*[29]स्टॉट ने सोलहवीं

शताब्दी की बहस की बात बताई कि परमेश्वर वास्तव में *हमें* धर्मी *बनाता है* (कैथोलिक स्थिति) या वह *हमें* धर्मी के रूप में *गिनता है* (सुधारवाद की स्थिति)(स्टॉट, 127)। [30]मौरिस, 178.

[31]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955)। [32]ज्योफ्री डब्लयू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल गरहर्ड फ्रेड्रिक, अनु. ज्योफ्री डब्लयू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 1298-1301 में एच. कोंज़लमन, *''charis.''* [33]वही, 1304. [34]उस *अनुग्रह* का अपना उदाहरण दें, जो दूसरों द्वारा आप पर हुआ है। [35]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 523. [36]जिम्मी ऐलन, *सर्वे ऑफ़ रोमन्स,* चौथा संशो. संस्क. (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1973), 55. [37]फिलिप येंसी, *वट'स सो अमेज़िंग अबाउट ग्रेस?* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन, 1997), 13. [38]जॉन न्यूटन, ''अमेज़िंग ग्रेस,'' *सांग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. व संपा. ऑल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994). [39]डी. मार्टिन लॉयड-जोनस, *रोमन्स: अटोनमेंट एंड जस्टिफेकशन* (*3:20-4:25*) (लंदन: बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1970), 25. [40]रोमियों 6:21, 22; 7:5, 6; 16:25-27; गलातियों 4:8, 9; इफिसियों 5:8; कुलुस्सियों 1:21, 22 [''पहले ... अब'']; 3:7, 8; इब्रानियों 12:26; 1 पतरस 2:10; 2:25.

[41]मू, 135.